प्रस्तुतकत्री- डॉ.जागृति

(अतिथि प्राध्यापिका)

हिन्दी विभाग, रामदयालु सिंह, महाविद्यालय

मुजफ्फरपुर

पार्ट – 1 (एम.आई.एल)

‘हरिऔध’ जी द्वारा रचित शीर्षक कविता ‘फूल और काँटा’ का भावार्थ ।

अयोध्या सिंह “हरिऔध” जी कालजयी कविताओं के रचयिताओं में से है। ‘हरिऔध’ जी कविताएं देश, काल, और परिस्थितियों की सीमाओं में सिमट कर न रहने वाले बल्कि संपूर्ण विश्व की धरोहर के रूप में विख्यात है आज के समय में भी उनकी कविताएं किसी पहचान की मोहताज नहीं है।उसी में से उनकी एक कविता “फूल और काँटा” एक प्रसिद्ध कविता है ऐसा कोई जगह नहीं ऐसा कोई देश नहीं जहां “फूल और काँटा”न हो ऐसा कोई समय नहीं होगा और न रहने की संभावना ही कि जब फूल और काँटा का अस्तित्व न होगा हर परिस्थिति में फूल और काँटा काअपना महत्व होता है।

इसलिए यह कविता हर परिस्थिति हर समय में अपना महत्व कम नहीं होने देती। फूल और काँटा कविता के द्वारा कवि 'हरिऔध' जी पूरे विश्व के एक बड़े रहस्य की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते है कि एक ही पेड़ में फूल और काँटा निकलता है और एक ही कुल में दो बच्चें पैदा लेते हैं। दोनों को सब कुछ समान तरह से प्यार, दुलार, मान, सम्मान ।फिर भी वह विपरीत स्वभाव के क्यों हो जाते हैं। एक कुल का नाम रौशन करता है। वहीं पर दूसरा कुल का नाम खराब करता है। यह कैसे हो जाते?कवि जी इस कविता के माध्यम से पुर्नजन्म के सिंद्धांत को भी परिपुष्ट करना चाहता है। व्यक्ति के स्वभाव में पूर्वजन्मों के संस्कारों का बहुत बड़ा योगदान होता है, अन्यथा ऐसा कैसे हो सकता है

कविता :-

जन्म लेते है' जगह में एक ही, एक ही पौधा उन्हें है पलता

रात में उन पर चमकता चाँद भी, एक ही सी चांदनी है डालता।मेघ उन पर है बरसता एक सा,

एक सी उन पर हवाएं है, वहीं पर सदा ही यह दिखाता है हमें, ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेद कर काँटा किसी की उंगलियां फाड़ देता है किसी का वर वसन प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर,

भँवर का है भेद देता श्याम तन फूल लेकर तितलियों को गोद में भंवर को अपना अनूठा रस पिला, निज सुगन्धों और निराले ढंग से,है सदा देता कली का जी खिला।है खटकता एक सबकी आँख में

दूसरा है सोहता सुर शीश पर, किस तरह कुल की बड़ाई काम दे जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

भावार्थ:-

प्रस्तुत कविता 'फूल और काँटा' कवि 'हरिऔध' जी द्वारा विरचित है। इस कविता में कवि जी ने फूल और काँटा की तुलना उनके विभिन्न प्राकृतिक गुणों के आधार पर की है। एक ही पौधे में जन्म लेने वाला फूल और काँटा एक ही कुल में जन्म लेने वाले दो व्यक्ति इनके व्यवहारिक गुणों में बहुत अंतर क्यों होता है। इन दोनों का परवरिश, भरण,पोषण एक ही जैसा होता है

दोनों पर एक ही सूरज का रोशनी, रात की चांदनी दोनों पर एक समान रोशनी डालता है बरसात के समय पड़ने वाला पानी की बूंदें दोनों पर एक समान पड़ती है। हवा का सदा व्यवहार इन दोनों के प्रति एक जैसी है। फिर भी इनके व्यवहार में इतना अंतर क्यों दिखाई देता है। एक काँटा है जो किसी कि उंगलियां फाड़ देती है। वस्त्र फाड़ देते है। उनकी परवाह उनकों नहीं होता तितलियों के कोमल पंख को फाड़ देते भंवरा जो फूलों का रस पान करने आते है उन्हें भी यह नहीं छोड़ते उसके श्याम तन को भेद देते हैं इन सभी अवगुणों के विपरीत अवस्था में मौजूद फूल का स्वभाव बहुत ही अच्छा और बड़प्पन के योग होता है। फूल तितलियों को अपनी गोद में बिठाते है तथा भौंरों को अपना रस पान कराते हैं। अपने आकर्षण रंगों से यह सदैव दूसरों को प्रभावित करते रहते है। यह भंवरों को अपने गोद में बिठाते है और रस पान कराते हैं। फूल सदा ही आदर्श एवं सुख प्रदायक के प्रतीक सर्वगुण संपन्न है। ये सबके प्रिय है तथा देवताओं के शीश पर नैवेद्य पूजा के रूप में चढ़ाएं

जाते है। फूल हमारी सद्भावना एवं निष्ठा के प्रतीक माने गए है।

प्रस्तुत भावार्थ में कहने का तात्पर्य यह है कि भले ही मनुष्य अच्छे या ऊँचे कुल में जन्म ले ले पर उसका स्वभाव अच्छा न उनमें निष्ठा, प्रेम, भावना तथा बड़प्पन के भाव न हो तो सब व्यर्थ है।मनुष्य की सच्ची पहचान उसके सदगुणों एवं व्यवहार से ही होती है। सिर्फ बड़े घर में जन्म लेने मात्र से से नहीं होता आदर्श, जीवन व्यतीत करने के उद्देश्य से मनुष्य को फूल के स्वाभाविक गुणों को अपनाना ही श्रेयस्कर होता है।

आपका व्यवहार ही आपका परिचय है।